|| श्री स्वामी सामर्थ ||

|| अथः कामदेव मंत्र ||

ॐ नमो आदेश गुरु को।
गुरूजी को आदेश।
कामदेव कामदेव क्या करें।
तुम मेरे निकट हाजिर होकर सब स्त्री पुरुष को मेरे वश में करें।
हर वक्त मेरे साथ रहे।
मेरा कारज सिद्ध करें।
काम देव ब्रह्म का पूत,ब्रह्म के स्वेद से प्रकटे।
लेके सुन्दर पुष्प बाण, वश में करे सारा जहाँ।
हर्षण रोचन मोहन शोषण मारण हुए एक से एक माहान।
वशीभूत करे सब जन फुलावे तीर कमान।
मन्मथ ,काम ,मनोभव ,मदन,कंन्दर्प।
अनंग ,कामदेव ,रागवृंत,मनसिजा और रतिकांत।
पुष्पवान ,पुष्पधंव ,प्रद्युम्न तथा भस्मशरीर।
नमन करने भस्मशरीर पुकारे।
वश करने हेतु मोहन क्रिया सुधारे।
रती ,प्रीती,रेवा ,मन्मथप्रिया,रागलता।
शुभांगी .कामकला ,कामप्रिया ,प्रीती-कामा ,मायावती।
सुन्दर काम की होवे मोहक कामिनी।
अटल से अटल वश में करे ,मुग्ध दामिनी।
कुमकुम चन्दन कपूर गोरोचन सुहागा।
टिका करके कामदेव सवारे भागा।
प्रेम का तारा मोहय मोहय वशय वशय आकर्शय आकर्शय
कामय कामय पूरे पूरे क्लेदय क्लेदय।
चाँद को जैसे चांदनी प्यारी।प्रेम की भक्ति मन ही मन तारी।

ॐ कामाय नमः सम्मोहय सम्मोहय।

ॐ भस्म शरीराय नमः सम्मोहय सम्मोहय।
ॐ अनंगाय नमः सम्मोहय सम्मोहय।
ॐ मन्मथाय नमः सम्मोहय सम्मोहय।
ॐ वसंत सखाय नमः सम्मोहय सम्मोहय।
ॐ इक्षु धनुर्धराय नमः सम्मोहय सम्मोहय।
ॐ भस्म शरीराय नमः सम्मोहय सम्मोहय।
ॐ पुष्प बाणय नमः सम्मोहय सम्मोहय।

केसर वेलची लोंग कुमकुम तथा सिंदूर।

मुट्ठी में लेकर मंत्र पंचम पढावे ।
चुटकी में सुन्दर से सुन्दर वश में करावे ।

ॐ कामदेवाय: विदमहे पुष्पबाणाय धीमहि तन्नो अनंग: प्रचोदयात।

सुख सम्पत्ति बहुत सी पावै।
अष्ट लक्ष्मी निज वास करवाई।
शिव पारवती प्रचुर आशीर्वाद देवे।
विष्णु लक्ष्मी सदा निकट होवे ।
माजी सागर में नैय्य तैरावे ।
कामदेव रति सौभाग्य दिलावे।
ॐ स्वामी ॐ स्वामी ॐ स्वामी
ॐ तत्सत

॥ श्रीगुरुदत्तात्रेयार्पणमस्तु ॥
|| श्री स्वामी समर्थार्पण मस्तु||